AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 04 | Issue 01 | January 2023 | *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 63-67

संयुक्त राष्ट्र संघ के सुरक्षा परिषद में भारत के स्थाई सदस्यता की दावेदारी एवं चुनौतियां

स्वप्निल पांडेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
चंद्रकांति रामावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज गोरखपुर

सारांश -

आज दुनिया के अधिकांश देश संयुक्त राष्ट्र संघ के सर्वाधिक प्रभावशाली अंग सुरक्षा परिषद के सुधार एवं विस्तार की मांग कर रहे हैं। विश्व शांति को स्थापित करने के उद्देश्य से 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र की स्थापना की स्थापना की गई। विश्व की संपूर्ण जनसंख्या का 17 प्रतिषत भाग भारत में ही निवास करता है। सुरक्षा परिषद में विकासशील देशों का कोई प्रतिनिधित्व नहीं करता है। यदि भारत को सुरक्षा परिषद का स्थाई सदस्य बनना है तो हर एक भारतवासी की यही बड़ी उपलब्धि होगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र संयुक्त राष्ट्र की महासभा में संबोधित करते हुए कहा किबिना व्यापक सुधार के संयुक्त राष्ट्र अपने विश्वसनीयता के लिए संकट का सामना करना कर रहा है । आज - दुनिया को ऐसे बहुपक्षीय मंच की जरूरत है जो अपनी वास्तविकता को प्रदर्शित कर सके,सभी को अपने विचार रखने का अवसर प्रदान कर सकें जिससे मानव का कल्याण हो सके। सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता में दावेदारी से पूर्व अपनी अंदरूनी समस्याओं जैसे देश में असमानता, गरीबी ,अशिक्षा मूलभूत संसाधनों की कमी, बेरोजगारी आदि को दूर करना होगा। संयुक्त राष्ट्र का कोई कार्यक्रम तब तक अस्तित्व में नहीं आता जब तक सुरक्षा परिषद उस पर अपनी मुहर नहीं लगाता ।

मूल शब्दावलीसंयुक्त राष्ट्र -, स्थाई सदस्य, बहुपक्षीय मंच, विस्तार की मांग ।

CORRESPONDING AUTHOR:

Swapnil Pandey
Assistant professor, Department of Political Science,
Chandrakanti Ramavati Devi Arya Mahila PG College, Gorakhpur, UP
Email: swapnilcrd@gmail.com

RESEARCH ARTICLE

प्रस्तावना:-

विश्व शांति को स्थापित करने के उद्देश्य से 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र की स्थापना की स्थापना की गई, परंतु वर्तमान विश्व में यह कहना अध्ययन का विषय है किविश्व शांति को स्थापित करने के लिए क्या प्रयास किए जाएं। - वर्तमान विश्व में जहां एक ओर विज्ञान और विकास की दिशा में तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है और वहीं दूसरी ओर विकसित बनाम विकासशील राष्ट्रों के बीच तीव्र मतभेद, पर्यावरण संरक्षण, आतंकवाद और आणविक शस्त्र जैसे मुद्दों ने विश्व शांति के मार्ग में बाधक की भूमिका का निर्वहन किया है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए प्राथमिक रूप से महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। वर्तमान में यदि सुरक्षा परिषद के सदस्यों की बात करें तो अमेरिका, फ्रांस ,ब्रिटेन, रूस ,चीन सुरक्षा परिषद के स्थाई सदस्य हैं जिनकी संख्या 5 है तथा 10 अस्थाई सदस्य हैं जो विभिन्न गोलार्ध से सम्मिलित किए जाते हैं।

आज दुनिया के अधिकांश देश संयुक्त राष्ट्र संघ के सर्वाधिक प्रभावशाली अंग सुरक्षा परिषद के सुधार एवं विस्तार की मांग कर रहे हैं। सुरक्षा परिषद के सुधार व विस्तार की मांग करने वाले राष्ट्र सही अर्थों में इस प्रभावशाली अंग को विश्व के सभी देशों का प्रतिनिधित्व निकाय बनाना चाहते हैं। भारत संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र पर हस्ताक्षर कर इस संगठन के जन्मदाता राष्ट्रों में अपना नाम शामिल करते हुए संयुक्त राष्ट्र के सिद्धांतों एवं उद्देश्यों पर अपनी सहमति प्रदान कर 24 अक्टूबर 1945 को 51 राष्ट्रों के प्रतिनिधियों के साथ मिलकर भारत स्थापना राष्ट्र बन गया है।

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना से लेकर वर्तमान तक सदस्यों की संख्या में वृद्धि हुई परंतु सुरक्षा परिषद जो महत्वपूर्ण अंग है आज तक उसका विस्तार नहीं हुआ। आज भी सुरक्षा परिषद में पांच स्थाई राष्ट्र एवं 10 अस्थाई राष्ट्र है।

वर्तमान में विश्व के कुछ देश सुरक्षा परिषद के विस्तार की मांग के साथसाथ इस परिषद की स्थाई सदस्यता के - लिए भी दावेदारी प्रस्तुत कर रहे हैं। सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता के लिए भारत भी सदैव अपनी दावेदारी प्रस्तुत कर रहा है। स्थाई सदस्यता के लिए भारत की दावेदारी पंडित नेहरू के समय से चली आ रही है तब राष्ट्रीय हित सर्वोपरि माना जाता था। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा किभारत सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता का प्रबल दावेदार भी है - क्योंकि भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है भारत ने वैश्विक परिस्थितिके अनुकूल स्वयं को ढाल भी लिया है। एक इंटरव्यू में उन्होंने कहाजो लोग स्थाई सदस्यता के लाभों का आनंद ले रहे हैं वह स्पष्ट रूप से - सुधार देखने की जल्दी में नहीं है।

भारत द्वारा दावेदारी के पक्ष में निम्न तर्क प्रस्तुत किए जा रहे हैं -

1) लगभग 1 अरब से अधिक जनसंख्या के साथ भारत विश्व का दूसरा बड़ा जनसंख्या वाला देश है।विश्व की संपूर्ण जनसंख्या का 17 प्रतिषत भाग भारत में ही निवास करता है।
2) सुरक्षा परिषद में विकासशील देशों का कोई प्रतिनिधित्व नहीं करता है।
3) विकासशील देश एवं गुटनिरपेक्ष आंदोलन का स्वाभाविक नेता होने के कारण भारत को सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता प्रदान की जानी चाहिए। इसे दक्षिण एशियाई देशों में भारत का प्रभुत्व अधिक महत्वपूर्ण है।

4) भारत एक विशाल देश है भारत का क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में सातवां स्थान है, जिसके कारण भारत एक विकासशील देश भी माना जाता है और साथ ही साथ या विशाल देश भी है।
5) वर्तमान व्यवस्था में भी भारत का स्थान महत्वपूर्ण है स्थापना में भागीदारी उसके आदर्शों एवं उद्देश्यों के प्रति वचनबद्ध होने के कारण भी भारत को दावेदारी प्रदान की जानी चाहिए।
6) भारत में संयुक्त राष्ट्र के कार्यक्रम में जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद विरोधी अभियानों में अपना योगदान दिया है।
7) भारत परमाणु उद्योग क्लब का मान्यता प्राप्त सदस्य तथा समयसमय पर संयुक्त राष्ट्र के कार्यक्रमों में अपनी - सक्रिय सहभागिता प्रदान करता है।
8) भारत विश्व के प्रभावशाली संगठन जैसे छाडऐ॥त्बएळ.4ए आदि महत्वपूर्ण देशों के साथ मिलकर विकास के लिए कार्यक्रम कर रहा है तथा सतत प्रयास कर रहा तथा पक्ष में अपने दावेदारी प्रस्तुत करता है।
9) भारत कोरोना जैसी महामारी में भी विश्व को एक शक्ति प्रदान किया जिससे इस चुनौती से लड़ा जा सके और सामना किया जा सके।
10) भारत ने कोरोना वैक्सीन निर्माण में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वही उसके समक्ष चुनौतियां भी अपार है जिनको पार करके ही भारत स्थाई सदस्यता प्राप्त कर सकता है

चुनौतियाँ-

1) भारत एक प्रमुख परमाणु संपन्न राष्ट्र है जो विश्व के अन्य देशों को पसंद नहीं आता।
2) सुरक्षा परिषद के स्थाई सदस्य अमेरिका ,चीन ,रूस ,स्थाई सदस्य की संख्या बढ़ाए जाने का विरोध कर रहे हैं क्योंकि ये सभी विश्व के समस्त बागडोर को अपने हाथों में सुरक्षित करना चाहते हैं।
3) सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता में दावेदारी से पूर्व अपनी अंदरूनी समस्याओं जैसे देश में असमानता, गरीबी, अशिक्षा मूलभूत संसाधनों की कमी, बेरोजगारी आदि को दूर करना होगा।
4) वर्तमान में भारत एक विकासशील राष्ट्र है उसे अपनी दावेदारी प्रस्तुत करने से पूर्व अपनी आर्थिक सुदृढ़ता सुनिश्चित करनी होगी।
5) स्थाई सदस्य देश अपना वीटो पावर छोड़ने के लिए सहमत नहीं है।
6) भारत को सदस्य बनाने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ को अपने चार्टर में संशोधन करना होगा तथा दो तिहाई सदस्यों की सहमति लेनी होगी जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नहीं बनती है।
7) भारत को अपना मानव विकास सूचकांक,लैंगिक अनुपात प्रति व्यक्ति आय बढ़ाना होगा।

इन सभी चुनौतियों को दूर करने तथा विश्व के सभी राष्ट्रों के सकारात्मक समर्थन के पश्चात भारत को स्थाई सदस्यता प्राप्त हो सकती है। वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत तेजी से उभरता हुआ राष्ट्र बन कर सामने आ रहा है। आंतरिक मामलों में नोटबंदी, जीएसटी, सर्जिकल स्ट्राइक, अनुच्छेद 370 की समाप्ति, मोदी सरकार के निर्णय

भारत को एक सकारात्मक नेतृत्व के मार्ग पर ले जा रहे हैं। वहीं वैश्विक मंच पर मोदी के नेतृत्व में पाकिस्तान को पस्त करने के साथ ही शक्ति का केंद्र अमेरिका के साथ सकारात्मक पल निश्चित ही भारत का मजबूत पक्ष प्रस्तुत कर रही है। यदि भारत को सुरक्षा परिषद का स्थाई सदस्य बनना है तो हर एक भारतवासी की यही बड़ी उपलब्धि होगी जिसका श्रेय किसी नेता सरकार या राजनीतिक दल को प्राप्त नहीं होगा। यह संपूर्ण राष्ट्र के लिए सतत प्रयास का परिणाम होगा।

भारत के संपूर्ण निवासी यह संकल्प लें कि उन्हें सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता चाहिए तो यह अवश्य प्राप्त होगी।संयुक्त राष्ट्र के 75 वर्ष पूर्ण होने पर एक बार पुनः उम्मीद की जा रही है कि सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता में वृद्धि की जाएगी जिसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र की महासभा में संबोधित करते हुए कहा कि बिना व्यापक सुधार के संयुक्त राष्ट्र अपने विश्वस्त विश्वसनीयता के लिए संकट का सामना करना कर रहा है। आज दुनिया को ऐसे बहुपक्षीय मंच की जरूरत है जो अपनी वास्तविकता को प्रदर्शित कर सके ,सभी को अपने विचार रखने का अवसर प्रदान कर सकें जिससे मानव का कल्याण हो सके।

द्वितीय विश्वयुद्ध के विनाश के पश्चात भविष्य में युद्ध से बचने के लिए ही संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई परंतु आज महाशक्ति का स्वरूप बदल चुका है ।आज विश्व शांति संरचना व आर्थिक ताकत में परिवर्तन हो चुका है।नरेंद्र मोदी ने कहा कि यदि सभी बदल जाए संयुक्त राष्ट्र अपनी नीतियां बदल दे तो विश्व शक्ति संरचना स्थापित होंगी क्योंकि विस्तार की आवश्यकता सुरक्षा परिषद का मुख्य आधार एवं रीड है ।संयुक्त राष्ट्र का कोई कार्यक्रम तब तक अस्तित्व में नहीं आता जब तक सुरक्षा परिषद उस पर अपनी मुहर नहीं लगाता यहां तक कि सुरक्षा परिषद ही बजट पर भी अपना मुहर लगाता है जिससे सुरक्षा परिषद की कार्यप्रणाली चलती है। जब संयुक्त राष्ट्र का गठन किया गया तब इसकी संख्या 51 थी परंतु अभी इसकी संख्या बढ़कर 193 हो चुकी है। इसके विस्तार के रूप में देखा जाए तो केवल एक बार 1965 में इसका विस्तार किया गया था इसके मूल रूप में एक रूप में 11सीटें थी पांच स्थाई और 6 अस्थाई सदस्य के रूप में और अब इसकी सदस्य संख्या 15 है जो जिसमें पांच स्थाई सदस्य तथा 10 अस्थाई सदस्य हैं तब से लेकर आज तक शक्ति संरचना देशकाल परिस्थितियां बदल गई परंतु संयुक्त राष्ट्र के स्थाई सदस्यों की संख्या में कोई वृद्धि नहीं की गई ।सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता के लिए बारबार भारत अपनी दावेदारी प्रस्तुत कर रहा परंतु अभी तक इस से कोई परिवर्तन - नहीं हुआ।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता की दावेदारी पर भारत की दावेदारी के लिए बारबार जोर - बार दोहराया -लगा रहे हैं परंतु वह अपने बुनियादी ढांचे में कोई परिवर्तन नहीं कर रहा है। नरेंद्र मोदी ने इस मांग को बार भारत विश्व का सर्वाधिक -और कहाविकासषील लोकतंत्र देश है जहां विश्व की जनसंख्या निवास करती है। यहाँ कई आंकड़ों, भाषाएं, बोलियां बोली जाती है, जहां अनेक विचारधाराएं हैं साथ ही भारत एक विश्व शांति का अग्रदूत भी माना जा रहा है।

महासभा में संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा भारत ने 50 से ज्यादा पीसकीपिंग मिशन में अपने जहाजों को भेजा है ।आत्मनिर्भर भारत एकता, अखंडता, व्यक्ति निर्माण आवश्यक नियंत्रण स्थापित करने की क्षमता भारत रखता है ।भारत विश्व गुरु के रूप में ऐसी उभरती शक्ति है जो वसुधैव कुटुंबकम की नीति पर कार्य करता है।

यदि देखा जाए तो उसने अपने वीटो पावर का दुरुपयोग को अत्यंत ही व्यवहारिक बना दिया है जबकि इसी तरह भारत अपनी पूर्ण क्षमता से मजबूती प्रदान करने में लगा है। भारत में कोरोना जैसी महामारी में भी 150 से अधिक देशों को आवश्यक दवाएं ,मानवाधिकार, जलवायु परिवर्तन में भारत सुरक्षा परिषद के साथ मिलकर कार्य कर रहा है।

यूनाइटेड नेशन सिक्योरिटी काउंसिल, विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व व्यापार संगठन का एक संरचनात्मक सुधार करना चाहिए। भारत जून 2020 में 2 वर्षों के लिए शक्तिशाली सुरक्षा परिषद का स्थाई सदस्य बन चुका था इससे पूर्व भारत 8 बार 2 वर्ष के कार्यकाल में अपनी सेवाएं दे चुका है ।संयुक्त राष्ट्र के स्थापना सदस्य होने के कारण भारत का पक्ष सदैव मजबूत रहा है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में अपना निरंतर योगदान दिया है और 2007 में महिला सर्व बल सहित दो लाख सैनिक विदेशों में भेज चुका है।

निष्कर्ष-

यदि भारत सुरक्षा परिषद का स्थाई सदस्य बनता है तो उसके पास वैश्विक संरचना तथा विश्व को नहीं आकृति देने की क्षमता भी होगी। सुरक्षा परिषद की धीमी प्रक्रिया से निराश होकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में पूछा कि हमें कब तक प्रतीक्षा करनी होगी।संयुक्त राष्ट -ªएकमात्र ऐसा संगठन, जहाँ विश्व के सभी बड़े देश, बड़े नेता, एक मंच पर एक साथ कार्य करते हैं। इसी कारण भारत को सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए तब तक जब तक सफलता ना मिल जाए।

सन्दर्भ:

1) https://www.amarujala.com/india-news/unsc-united-nations-security-council-introduction-stands-of-permanent-members-on-reforms?pageId=7
2) https://www.punjabkesari.in/blogs/news/india-s-claim-for-permanent-seat-in-security-council-strong-1464294
3) https://navbharattimes.indiatimes.com/world/america/jaishankar-is-a-strong-contender-for-india-to-become-a-permanent-member-of-the-united-nations-security-council/articleshow/94147380.cms
4) फडिया बी०एल० अन्तर्राष्ट्रीय संबंध
5) सक्सेना अरुण – अब भारत के लिये कैसा होगा अमेरिका का रुख
6) राजीव सीकरी,भारत की विदेश नीति पृष्ठ संख्या १४
7) क्रानिकल भारत एवं संयुक्त राष्ट्र

■ ■ ■